



# सम्पादकीय

इजराइल का ईरान पर हमला: तीसरे विश्व युद्ध की शुरुआत?

विश्व स्तर पर तनाव चरम सीमा पर पहुंच गया है। इजराइल ने ईरान के परमाणु ठिकानों पर बड़े पैमाने पर हमला कर दिया है। इससे ईरान का आसमान सफेद, काले, नारंगी और लाल रंग के धुंए से पट गया। इस हमले में 300 से अधिक मिसाइलें दागी गईं। नताज सहित कई न्यूक्लियर साइट्स को इस हमले में निशाना बनाया गया है। इजराइल ने दावा किया है, कई परमाणु वैज्ञानिकों की हमले में मौत हुई और ईरान को भारी नुकसान हुआ है। यह हमला इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की ओर से अपरेशन राइजिंग लायन का हिस्सा बताया गया है। यह हमला ईरान के परमाणु कार्यक्रम को नष्ट करने के लिए किया गया है। इस हमले में अमेरिका की भी मूक सहमति है। खुले तौर पर अमेरिका इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ले रहा है। हमले के बाद ईरान ने कड़ा जवाब देने की चेतावनी देकर द्वारा से इजराइल पर हमला शुरू कर दिया है। तेहरान ने इसे युद्ध की घोषणा मानते हुये कहा कि ईरान ऐसा जवाब देगा, जिससे इजराइल कांप उठेगा। विदेशी मामलों के जानकार एवं रक्षा विशेषज्ञों का मानना है, कि यह हमला क्षेत्रीय और वैश्विक शांति के लिए खतरनाक सांबित हो सकता है। फारस की खाड़ी में तनाव बढ़ने से तेल और गैस की आपूर्ति पर संकट मंडरा रहा है। होम्युज की खाड़ी, जहां से दुनिया का 40 फीसद से अधिक तेल का परिवहन कई देशों के लिए होता है, उसके ब्लॉक होने से सारी दुनिया के जनजीवन और व्यापार को लेकर बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है। भारत ने फारस की खाड़ी से गुजरने वाली सभी डड़ानों को वापस बुला लिया है। वैश्विक शेयर बाजारों में भारी गिरावट हो रही है। भारतीय शेयर बाजार में निपटी और सेंसेक्स 1000 अंक तक लुढ़क गए हैं। कच्चे तेल की कीमतें आसमान छूने लगी हैं। अमेरिका ने इस हमले को लेकर अपना पल्ला झाड़ लिया है। सूतों का दावा है, नेतन्याहू को अमेरिका के राष्ट्रपति राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन प्राप्त है। ईरान के साथ भारत की बहुत पुरानी दोस्ती है। विश्लेषकों ने इजराइल की इस कार्रवाई को परमाणु अपराध निरूपित किया है। इजराइल ने अभी जो ईरान के ऊपर हमला किया है। यह हमला विश्व युद्ध के खतरे को बढ़ाता है। द्वितीय विश्व युद्ध के 75 वर्षों बाद पहली बार न्यूक्लियर साइट्स पर हमला हुआ है। ईरान के जवाबी हमले से आसपास के देशों की प्रतिक्रिया से स्थिति विस्फोट होना तय है। विश्व समुदाय ईरान पर हुए हमले के बाद संयम और कूटनीति की अपील कर रहा है। क्या इससे यह संकट टल पाएगा। इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू जिस तरह से आतंक फैला रहे हैं, उससे सारी दुनिया परेशान है। नेतन्याहू ने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की बात नहीं मानी, मानव अधिकारों का लगातार उल्लंघन कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जो नियम युद्ध के लिए बनाए गए थे उनका भी पालन नहीं कर रहे हैं। जिस तरह की मनमानी अमेरिका और इजराइल मिलकर कर रहे हैं उसके बाद अब यह स्पष्ट रूप से दिखने लगा है, इजराइल द्वारा ईरान के ऊपर किए गए हमले के बाद विश्व युद्ध को रोका जाना संभव नहीं है। परमाणु ठिकानों पर हमला करके वैश्विक आबादी के लिए जो खतरा पैदा किया गया है वह इतनी आसानी से निपटने वाला नहीं है। इस हमले के बाद दुनिया के देशों की अर्थव्यवस्था तथा परमाणु हमले की आशंका के चलते जिस तरह का वातावरण बन गया है उसमें भारी तबाही होना तय है। वर्तमान स्थिति में कोई भी ऐसा वैश्विक नेता नहीं है जो इस युद्ध की आशंका को रोक सके। सभी बड़ी-बड़ी महाशक्तियां इस विनाशकारी युद्ध की आग में धी डालने का काम करके युद्ध को भड़काने का काम कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं अपना वजूद खो चुके हैं। ऐसी हालत में 75 वर्षों से जो नहीं हुआ था अब वह होने जा रहा है। एक बार फिर सारी दुनिया विनाश की ओर आगे बढ़ रही है। समय रहते यदि इसे नहीं रोका गया तो विनाशकारी परिणाम बहुत जल्द देखने को मिल सकते हैं। पिछले तीन दशक में छोटे-छोटे देशों के पास भी नवीन तकनीकी के हथियार जो बड़े विनाशकारी सांबित हो रहे हैं ऐसी स्थिति में एक बार युद्ध शुरू हुआ तो इसे रोकना बहुत मुश्किल होगा। भारत को इस स्थिति में पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंध और विदेशीनीति में सुधार करने की जरूरत है। गुटनिरपेक्ष देश के रूप में अब भारत की पहचान नहीं रही, जिसके कारण भारत वह भूमिका अदा नहीं कर पा रहा है जो गुटनिरपेक्ष आंदोलन के समय भारत भूमिका अदा करता था। समय रहते भारत को इस विश्व युद्ध की विभीषिका से बचा कर रख पाएंगे।

# उपजाऊ भूमि को मरुस्थल होने से बचाना होगा

- ललित गर्ग  
(विश्व मरुस्थलीकरण एवं सूखा निवारण दिवस - 17 जून 2025)

रेखांकित करता है। बोगोटा में आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली द्वारा नियमाय में प्रदूषण, भूमि का दोहन, जलवायु अराजकता और जैव विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमि का महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और समावेशी विकास के मानव एवं जीव-जंतुओं का जीवन उत्प्रेरक के रूप में भूमि बहाली, मरुस्थली करण एवं सूखा निवारण की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालेगा, साथ ही भोजन, पानी, रोजगार और सारी विविधता विनाश का एक जरूरी सूखा सुनिश्चित करने में स्वस्थ मिश्रण स्वस्थ भूमि को रेगिस्तान भूमिका पर जोर देगा। स्वस्थ स्वस्थ भूमि संपन्न पर बदल रहा है और संचय देगा।

रेखांकित करता है। बोगोटा में अर्थव्यवस्थाओं का आधार है,

आयोजित यह कार्यक्रम स्थिरता, शांति और स











